

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री भगवान विष्णु नमः ॥

श्री ॐ जय जगदीश हरे

Om Jai Jagdish Hare — संपूर्ण पावन आरती पद, सरल हिंदी भावार्थ एवं विधि सहित

रचयिता: पंडित श्रद्धाराम फिल्लौरी ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण पावन आरती पद (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

टेक

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट,
क्षण में दूर करे। ॐ जय जगदीश हरे॥

भावार्थ: हे संपूर्ण चराचर जगत के स्वामी और पालनहार भगवान श्री जगदीश (विष्णु)! आपकी सदा ही जय हो। आप अपने अनन्य भक्तों और शरणागत सेवकों के समस्त संकटों, विपत्तियों और दुखों को एक क्षण में दूर करने वाले हैं। हे करुणामय प्रभु, आपकी जय हो।

पद १

जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का।
स्वामी दुःख विनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।
ॐ जय जगदीश हरे॥

भावार्थ: जो भी भक्त सच्चे भाव और निष्ठा से आपका ध्यान करता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त करता है तथा उसके मन के समस्त संताप, भय और मानसिक क्लेश विनष्ट हो जाते हैं। उसके घर में सुख, समृद्धि और आनंद का वास होता है तथा शरीर के समस्त रोग और शारीरिक कष्ट मिट जाते हैं।

पद २

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहुं मैं किसकी।
स्वामी शरण गहुं मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी।
ॐ जय जगदीश हरे॥

भावार्थ: हे प्रभु, आप ही मेरे परम माता और पिता हैं; आपके अतिरिक्त मैं इस संसार में और किसकी शरण ग्रहण करूँ? आपके सिवा मेरा इस ब्रह्मांड में कोई अन्य रक्षक और आश्रय नहीं है, जिससे मैं किसी सहायता या कृपा की आस रख सकूँ।

पद ३

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
स्वामी तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।
ॐ जय जगदीश हरे॥

भावार्थ: आप ही सर्वव्यापी, परिपूर्ण परमात्मा हैं और समस्त प्राणियों के हृदय के गुप्त भावों को जानने वाले अन्तर्यामी हैं। आप ही सनातन पारब्रह्म, देवाधिदेव परमेश्वर हैं और संपूर्ण सृष्टि के एकछत्र अधिपति और स्वामी हैं।

पद ४

तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्ता।
स्वामी तुम पालन-कर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।
ॐ जय जगदीश हरे॥

भावार्थ: हे स्वामी, आप अपार दया और करुणा के अथाह सागर हैं और समस्त चराचर जीवों का वात्सल्यपूर्वक पालन-पोषण करने वाले हैं। मैं अज्ञानी, दुर्बुद्धि और सांसारिक कामनाओं से ग्रस्त क्षुद्र जीव हुँ; हे मेरे पालनहार ईश्वर, अपनी अहैतुकी दया से मुझ दीन पर कृपा कीजिए।

पद ५

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
स्वामी सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति।
ॐ जय जगदीश हरे॥

भावार्थ: हे परमात्मा, आप सूक्ष्म और भौतिक इन्द्रियों की पहुंच से परे (अगोचर) हैं तथा संसार के समस्त प्राणियों के प्राणों के स्वामी व आधार हैं। मुझ जैसी कुबुद्धि और अज्ञानी आत्मा को आपकी प्राप्ति की कोई साधना या विधि ज्ञात नहीं है; हे दयामय प्रभु, आप स्वयं ही मुझे अपनी शरण में स्वीकार कीजिए।

पद ६

दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
स्वामी तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।
ॐ जय जगदीश हरे॥

भावार्थ: हे दीनों और असहायों के सच्चे बंधु, आप ही मेरे दुखों और संकटों का हरण करने वाले सर्वसमर्थ आराध्य स्वामी हैं। मैं अपनी सारी आशाएं छोड़कर आपके पावन द्वार पर शरणागत पड़ा हुँ; कृपा करके अपना अभय वरदहस्त मेरे सिर पर रखकर मुझे भवसागर से पार उतारिए।

पद ७

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥
स्वामी पाप हरो देवा॥
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

भावार्थ: हे देवाधिदेव, मेरे मन से काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि समस्त सांसारिक विषय-विकारों और दुर्गुणों को दूर कर दीजिए और मेरे समस्त पापों का नाश कीजिए। मेरे हृदय में अपने पावन चरणों के प्रति निष्काम श्रद्धा व अनन्य भक्ति का विस्तार कीजिए तथा मुझे साधु-संतों व परोपकार की सेवा का वरदान दीजिए।

समर्पण

तन-मन-धन सब कुछ है तेरा, स्वामी सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।
ॐ जय जगदीश हरे॥

भावार्थ: हे प्रभु, यह नश्वर शरीर, यह चंचल मन और जो भी सांसारिक धन-वैभव मेरे पास है, वह सब वास्तव में आपकी ही दी हुई धरोहर है। जब सब कुछ आपका ही है, तो जो आपका है वह मैं आपको ही श्रद्धापूर्वक समर्पित करता हुँ; इसमें मेरा अपना कुछ भी नहीं है।

फलश्रुति

श्री जगदीश जी की आरती, जो कोई नर गावे।
स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे।
ॐ जय जगदीश हरे॥

भावार्थ: भगवान श्री जगदीश जी की इस दिव्य और पावन आरती का जो भी भक्त नित्य प्रेम, श्रद्धा और एकाग्र चित्त से गान करता है, वह जीवन के समस्त क्लेशों और संतापों से मुक्त होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के समस्त मनवांछित फलों को प्राप्त करता है।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **पवित्रता एवं स्नान:** आरती से पूर्व स्नानादि कर स्वच्छ वस्त्र (संभव हो तो भगवान विष्णु के प्रिय पीले वस्त्र) धारण करें। आचमन कर स्वयं को बाह्य और आंतरिक रूप से शुद्ध करें।
- **आरती थाली की सज्जा:** पीतल, कांसा या चांदी की स्वच्छ थाली में गाय के शुद्ध घी का दीपक अथवा शुद्ध भीमसेनी कर्पूर रखें। थाली में कुमकुम से स्वास्तिक बनाएं, उस पर पीले अक्षत, पीले पुष्प और भगवान का प्रिय **तुलसी दल** अर्पित करें।
- **आरती घुमाने की विधि:** आरती की थाली को भगवान की प्रतिमा के सम्मुख 'ॐ' के आकार में या दक्षिणावर्त (Clockwise) दिशा में घुमाना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार सबसे पहले भगवान के श्रीचरणों में ४ बार, नाभि कमल के सम्मुख २ बार, मुखारविंद के सम्मुख १ बार और अंत में संपूर्ण विग्रह के चारों ओर ७ बार थाली को प्रेमपूर्वक घुमाना चाहिए।
- **सामूहिक गान एवं ताल:** आरती को कभी भी जल्दबाजी या कर्कश स्वर में न गाएं। लयबद्ध, शांत और स्पष्ट उच्चारण के साथ परिवार सहित एक स्वर में गान करें।
- **आरती ग्रहण एवं परिक्रमा:** आरती पूर्ण होने के उपरांत आचमनी से जल की तीन धाराएं थाली के चारों ओर घुमाकर धरती पर छोड़ें। इसके बाद आरती की ज्योति पर दोनों हाथ फेरकर अपने सिर और नेत्रों से लगाएं। अंत में अपने ही स्थान पर दक्षिणावर्त ३ बार घूमकर परिक्रमा करें और क्षमा-प्रार्थना करें।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **समस्त संकटों और विघ्नों का नाश:** आरती की टेक पंक्ति *'भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे'* के अनुसार जो भक्त प्रभु की शरण लेता है, उसके जीवन की कठिन से कठिन बाधाएं और विपत्तियां प्रभु की कृपा से क्षण भर में दूर हो जाती हैं।
- **पारिवारिक सुख-शांति एवं आरोग्यता:** *'सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का'*—इस पावन छंद के नित्य पाठ से घर में नकारात्मक ऊर्जा और वास्तु दोष समाप्त होते हैं, पारिवारिक कलह दूर होती है तथा असाध्य व्याधियों और शारीरिक कष्टों से मुक्ति मिलती है।
- **मानसिक शांति और विकारों का शमन:** *'विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा'* पंक्ति का ध्यान करते हुए आरती करने से काम, क्रोध, लोभ और अहंकार जैसे आंतरिक शत्रु शांत होते हैं, मन में सात्विक विचारों का उदय होता है और अंतःकरण निर्मल बनता है।
- **परम शरणागति और अहंकार मुक्ति:** *'तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा'*—यह दिव्य भाव भक्त को यह सिखाता है कि जो कुछ भी हमारे पास है, वह प्रभु की ही कृपा है। इस भाव से जीने वाला व्यक्ति चिंता, तनाव और भय से सदा के लिए मुक्त हो जाता है।
- **साधु-सेवा और सद्गुणों का विकास:** *'श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा'*—भगवान की आरती मनुष्य के भीतर धर्म, दया, परोपकार और सेवा का पावन संस्कार जाग्रत करती है, जिससे उसका यह लोक और परलोक दोनों संवर जाते हैं।